सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

कृषि विज्ञान केन्द्र, शामली

ग्राम जलालपुर, जिला शामली, उत्तर प्रदेश - 247776

फसल अवशेष जलाने से हानियां

- फसल अवशेषों को जलाने से ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ता है, जिससे मानव, पशु, और पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- फसल अवशेषों को जलाने के कारण मृदा तापमान में वृद्धि होती है, जिससे मृदा की ऊपरी परत सख्त हो जाती है और मृदा की सघनता में वृद्धि होती है, जिसके कारण भूमि के बंजर होने का खतरा बढ़ जाता है।
- फसल अवशेषों को जलाने के कारण मृदा में उपस्थित आवश्यक पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं, जिससे मृदा का pH स्तर बढ़ जाता है, और इसके परिणामस्वरूप मृदा की उर्वरा शक्ति में कमी आती है।
- अवशेषो को जलाने से जमीन की ऊपरी सतह पर रहने वाले मित्र कीट तथा केंचुओं आदि भी नष्ट हो जाते है, जिससे उत्पादन एवं मृदा स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है।
- भूमि के लाभदायक सूक्ष्म जीव व मित्र कीट जलकर नष्ट हो जाते हैं।
- यह मृदा जीवाणु की क्रियाशीलता को भी कम करते है।
- सड़क पर धुआँ छा जाने के कारण वाहनों के टकराने से दुर्घटनाएं घटित होती हैं।

फसल अवशेष प्रबंधन से लाभ

- फसल अवशेष प्रबंधन द्वारा वातावरण को प्रदूषण से बचाया जा सकता है, क्योंकि कृषि अवशेषों के जलने से उत्पन्न होने वाले धुएँ के कारण वातावरण प्रदूषित होता है। कृषि अवशेषों को भूमि में पुनः मिला देने से, हम स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण को प्राप्त कर सकते हैं।
- कृषि अवशेषों को खेतों में आच्छादन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है, जिससे भूमि में मौजूद पानी का वाष्पीकरण कम होता है, जिसके परिणामस्वरूप भूमि का तापमान अनुकूल बना रहता है।
- भूमि के पोषक तत्व व उर्वरा शक्ति में वृद्धि हो जाती है जिससे फसल उत्पादन अधिक होता है।
- भूमि के भौतिक व रासायनिक गुणों में सुधार होता है जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि होती है।
- फसल अवशेषों को भूमि में मिलाने से आगामी फसल के लिए रासायनिक खाद की आवश्यकता कम होती है।
- इस प्रक्रिया में भूमि के लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या में वृद्धि होती है, जिससे फसल उत्पादन अधिक होता है।
- फसल अवशेष प्रबंधन के माध्यम से मृदा क्षरण को रोका जा सकता है।

फसल अवशेष को बढ़ाएं, कृषि को सुरक्षित बनाएं

आलेख: डॉ साकिब परवेज, काम्या सिंह